Syllabus : Hindi

MM : 100 Time : 3 Hours

1. **हिन्दी भाषा और उसका विकास** :

अपभ्रंश (अवहट्ठ सहित) और पुरानी हिन्दी का संबंध, काव्यभाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास, मानक हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक विवरण(रूपगत) , हिन्दी–बोलियाँ – वर्गीकरण तथा क्षेत्र , नागरी लिपि का विकास तथा उसका मानकीकरण। हिन्दी प्रसार के आन्दोलन,प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिन्दी।

हिन्दी भाषा– प्रयोग के विविध रूप – बोली, मानक भाषा, सम्पर्क भाषा , राजभाषा और राष्ट्रभाषा , संचार– माध्यम और हिन्दी।

2. **हिन्दी साहित्य** : इतिहास –दर्शन, युग, प्रवृत्तियाँ, रचना एवं रचनाकार :

(क) **हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन**, हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन की पद्धतियाँ। हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास–ग्रंथ , हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक केन्द्र, संस्थाएँ एवं पत्र–पत्रिकाएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल–विभाजन और नामकरण।

(ख) **आदिकाल** : हिन्दी साहित्य का आरम्भ कब और कैसे , रासो– साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली, आरंभिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।

(ग) **मध्यकाल** : भक्ति –आंदोलन के उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय, निर्गुण–सगुण का संबंध, साम्य और वैषम्य, वैष्णव भक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार संत, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तःप्रादेशिक वैशिष्ट्य।

हिन्दी संत काव्य : संत काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण संत कवि – कबीर : भक्तिभावना, रहस्यवाद, समाजदर्शन, काव्यकला, नानक, दादू,रैदास। संतकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ, भारतीय धर्मसाधना में संत कवियों का स्थान।

हिन्दी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य – मुल्लादाउद (चंदायन), कुतुबन (मिरगावती), मंझन (मधुमालती), मलिक मुहम्मद जायसीः (पद्मावत), जायसी – सांस्कृतिक दृष्टि, लोकतत्व ; प्रेमभावना, रूपक तत्व, कथानक रूढ़ि , काव्यदृष्टि। सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप, हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

हिन्दी कृष्ण काव्य : विविध सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्णभक्त कवि और काव्य– सूरदास (सूरसागर) : भक्तिभावना , शृंगारवर्णन, वात्सल्यवर्णन, भ्रमरगीत– अंतर्वस्तु और विविधता, लोकतत्व, नन्ददास (रासपंचाध्यायी) ; भ्रमरगीत परम्परा , गीति–परम्परा और हिन्दी कृष्णकाव्य – मीरा – भक्तिभावना, विद्रोह–भावना, गीतितत्व ; रसखान।

हिन्दी रामकाव्य : विविध सम्प्रदाय, रामभक्ति शाखा के कवि और काव्य, तुलसीदास : प्रमुख कृतियाँ, काव्यरूप और उनका महत्व, भक्तिभावना, दर्शन, सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, लोक मंगल, युगबोध, काव्यदृष्टि।

(घ) रीतिकाल : सामाजिक –सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीतिकाव्य के मूल स्रोत, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व, विविध काव्यधाराएँ, रीतिकाल के प्रमुख कवि– केशवदासः आचार्यत्व, काव्यदृष्टि , संवाद–योजना, छंद–योजना ; मतिराम , भूषणः राष्ट्रीय चेतना और युगबोध, वीररस व्यंजना, काव्यकला, बिहारी : सौन्दर्यभावना, बहुज्ञता, काव्यकला; देव, घनानंद, स्वच्छन्दमार्ग, सौन्दर्य दृष्टि, प्रेमव्यंजना, काव्यदृष्टि, पद्माकर ; रीतिकाव्य में लोकजीवन, नीतिकाव्य परम्परा एवं प्रमुख कवि–रहीम,वृन्द,गिरिधर कविराय।

(ङ) आधुनिक काल : (काव्य)

आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि, 1857 की राज्यक्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेंन्दु तथा उनका मंडल।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग , हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, काव्यभाषा के रूप में खड़ीबोली की प्रतिष्ठा, हरिऔध, मैथिलीशरणगुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि। स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि।

छायावाद : छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद के प्रमुख कवि – जयशंकर प्रसाद : जीवनदर्शन, सांस्कृतिक दृष्टि , सौन्दर्यचेतना, कामायनी का आधुनिक संदर्भ ; सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि,प्रगति–चेतना, मुक्त छंद, प्रयोग के विविध आयाम, सुमित्रानंदन पंत : कल्पनाशीलता, प्रकृतिचित्रण, काव्ययात्रा, काव्यभाषा, महादेवी वर्मा : रहस्यानुभूति , वेदनातत्व, प्रगीति , प्रतीक एवं बिम्ब।

उत्तरछायावादी काव्य : उसके प्रमुख कवि एवं काव्य।

प्रगतिवाद : वैचारिक पृष्ठभूमि (मार्क्सवाद), सामाजिक दृष्टि, प्रमुख विशेषताएँ, प्रगतिवाद के प्रमुख कवि एवं काव्य। नागार्जुन – यथार्थ चेतना और लोकदृष्टि ; केदारनाथ अग्रवाल– प्रकृतिचित्रण और सौन्दर्यबोध ; शमशेर– काव्यानुभूति और सौन्दर्यदृष्टि।

प्रयोगवाद : वैचारिक पृष्ठभूमि , मनोविश्लेषणवाद एवं अस्तित्ववाद , व्यष्टि चेतना, प्रमुख कवि एवं काव्य, अज्ञेय–प्रयोगधर्मिता और काव्यभाषा।

नयी कविता : व्यष्टि –समष्टिबोध, प्रमुख कवि एवं काव्य, मुक्तिबोध– समाजबोध,फैंटेसी,

समकालीन कविता : काल संसक्ति और लोक संसक्ति, प्रमुख कवि और काव्य, रघुवीर सहाय– राजनीतिक चेतना, काव्यभाषा ; कुँवरनारायण – मिथकीय चेतना , काव्यदृष्टिः धूमिल–राजनीतिक–सामाजिक चेतना एवं व्यंग्य दृष्टि, समकालीन विमर्श :

(च) आधुनिक काल (गद्य) : हिन्दी गद्य का उद्‌भव तथा विकास 19वीं शताब्दीं के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता,

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास : परीक्षागुरु , चन्द्रकांता संतति : वस्तु एवं शिल्प। प्रेमचंद और उनका युग, गोदान–मुख्यपात्र, यथार्थ एवं आदर्श, गोदान और भारतीय किसान, महाकाव्यात्मकता, वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य । प्रेमचंद के परवर्ती प्रमुख उपन्यास एवं उपन्यासकार : जैनेन्द्र , अज्ञेय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, नरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम रजा, रांगेय राघव, मन्नू भंडारी, शेखर एक जीवनी (अज्ञेय): मनोवैज्ञानिक आयाम, वस्तु शिल्प वैशिष्ट्य। मैला आँचल (रेणु) : आंचलिकता , वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य। बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारीप्रसाद द्विवेदी : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चेतना, निपुणिका और नारी–मुक्ति की आकांक्षा, भाषा–शिल्प वैशिष्ट्य।

हिन्दी कहानी :

बीसवीं सदी की कहानी, प्रेमचंद और प्रसाद की कहानी कला।
प्रेमचंदोत्तर कहानी–आंदोलन– नयी कहानी, साठोत्तर कहानी, सामान्तर कहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, अकहानी।
समकालीन कहानी : संवेदना और शिल्प । समकालीन कहानी के प्रमुख कहानीकार।

हिन्दी नाटक :

हिन्दी नाटक और रंगमंच : विकास के चरण और प्रमुख नाटक एवं नाटककार– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी।
जयशंकर प्रसाद : चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी – राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, नाट्यशिल्प। प्रसादोत्तर नाटक : अंधायुग , आधे अधूरे, आठवाँ स्वर्ग – आधुनिकताबोध, प्रयोगधर्मिता और नाट्यभाषा।
हिन्दी एकांकी : विकास के चरण और प्रमुख एकांकी लेखक।

हिन्दी निबंध : हिन्दी निबंध का विकास, प्रकार तथा प्रमुख निबंधकार – बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई।

हिन्दी आलोचना : हिन्दी आलोचना का विकास तथा प्रमुख आलोचक – रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा , डॉ.नगेन्द्र, डॉ. नामवर सिंह , विजयदेव नारायण साही।

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएँ : संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी,आत्मकथा, रिपोर्ताज,आदि की विकास यात्रा।

3. **काव्यशास्त्र और आलोचना :**

काव्य–लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य–भेद।
प्रमुख सिद्धांत : रससिद्धांत – रस निष्पत्ति, भरतमुनि का रस सूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार, रस के अवयव साधारणीकरण , सहृदय की अवधारणा।

अलंकार सिद्धांत : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण – यमक,श्लेष, उपमा,रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टांत, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति, विरोधाभास।

रीति सिद्धांत : रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ।

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद।

वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।

औचित्य सिद्धांत : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

आधुनिक हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी , सौन्दर्य शास्त्रीय,शैली वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अरस्तू–अनुकरण एवं विरेचन सिद्धांत, लोंजाइनस – काव्य में उदात्ततत्व की अवधारणा , क्रोचे– अभिव्यंजनावाद, वर्ड्सवर्थ – काव्यभाषा सिद्धांत, कालरिज–कल्पना एवं फैंटेसी , टी.एस. इलियट– निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, आई.ए.रिचर्ड्स– सम्प्रेषण सिद्धांत

प्रमुख वाद एवं समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ : स्वच्छन्दतावाद, यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, आधुनिकता, उत्तरआधुनिकता, विडम्बना(आयरनी) , अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अंतर्विरोध (पैराडॉक्स), विखण्डन (डीकन्स्ट्रक्शन)